Inspira-Journal of Commerce, Economics & Computer Science (JCECS)
ISSN : 2395-7069 COSMOS Impact Factor: 4.964, Volume 06, No. 01, January-March, 2020, pp. 169-172

c) dkyhu lekt dk /kkfed fo'y"k.k

डॉ॰ सतीश कुमार*

परिचय

भारतीय संस्कृति को आदिकाल से धर्मप्रधान माना गया है। पूर्ण वैदिक काल में आर्य तथा आर्येत्तर सभ्यता एवं संस्कृतियों के संपर्क ने भारतीय लोगों की धार्मिक चेतना को अधिक उदार बना दिया। भारत भूमि के निवासियों को आर्यों ने धार्मिक मान्यताओं एवं उनके व्यवहारों को दार्शनिक रूप में सँवारकर ऐसा स्वरूप प्रदान किया जो अवर्णनीय है। वैदिक आर्यों प्रकृति की संजीवनी शक्तिसम्पन्न वैभवों की आराधना किया। जैसे– सूर्य, पवन, जल, अग्नि, पृथ्वी इत्यादी, जो मानव जीवन का मूल आधार है। अतः उन्होंने इन सभी को देवपद प्रदान किया। बहुदेव पूजक आर्यों के ऋग्वेद काल में ही इस तथ्य को स्वीकार कर लिया कि सम्पूर्ण दृश्यजगत एक ही सर्वशक्तिमान सत्ता की अभि व्यक्ति है।[1]

उत्तर वैदिक युग में आराध्य देवताओं की संख्या में बढ़ोतरी हो गयी। बहुत सारे यक्ष भूत–प्रेत आदि पूजा के पात्र माने गए। अथर्ववेद में ऐसा वर्णन मिलता है कि ऐसे अनेक धार्मिक विचारों तथा व्यवहारों को आत्मसात किया गया जो पूर्वकाल में लोग नहीं मानते थे। भगवान बुद्ध के जन्म काल के आस–पास भारतीय विचार जगत में उथल–पुथल हो रही थीं उसी समय देश में प्रमुखतः अनेक प्रकार के वाद प्रचलित थे। प्राचीन पाली सुत्रों बुद्ध के अर्विभाव के समय प्रचलित दर्षन के लगभग 63 वेदों का उल्लेख किया गया। जिनमें अनेक को ब्राह्मणों के द्वारा विरोध किया गया था।[2] बुद्ध का व्यक्तित्व उनके विरोधियों के अपेक्षा अधिक प्रभावशाली था। इसलिए उनके सामने सभी नत्मस्तक होते गए और उनके अनुयायियों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गयी।[3] बुद्ध का मानना था कि मनुष्य की एक ही जाति होती है वह ''मनुष्य जाति'' इसलिए बौद्ध धर्म किसी देश या प्रदेश तक सीमित नहीं रहा।

ck) /ke

भारत के अनेक महान राजाओं तथा उच्च पदाधिकारी गण ने बौद्ध धर्म को आत्मसात किया था। जिसमें मिनान्दर का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यवन राजा की राजधानी सियालकोट थी। तथा पश्चिमी पंजाब इनके शासन में थे। अपने शासन के समय में ही मिनांदर बौद्ध भिक्षुओं के सम्पर्क में आर्य, और स्थवीर नागशेन से बौद्ध धर्म की शिक्षा ग्रहण किया। जिसे बौद्ध धर्म में मिलिन्द लिखा गया है और मिलन्दपन्हों नामक ग्रन्थ में उन प्रश्नों का उत्तर दिया गया है, जिन्हें उसने अपने गुरू नागसेन से पूछा था। मिनान्दर के अनेक सिक्कों पर बौद्ध धर्म की धर्मचक्रप्रवर्तन का चिन्ह् धर्मचक्र अंकित है। मिनान्दर के विषय में बौद्ध ग्रन्थों में यह भी लिखा गया है कि उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी अस्थियों को सुरक्षित रखा गया था।[4] एक अन्य यवन राजा एगेथोक्लीज ने भी बौद्ध धर्म को स्वीकार किया था, जिसके सिक्कों पर बौद्ध स्तुप तथा बोधि वृक्ष अंकित है। इस प्रकार बहुत से यवनों ने बौद्ध धर्म को अपनाया था। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि यवन बौद्धों द्वारा संघ एवं

* एम॰ ए॰,पीएच॰ डी॰ (इतिहास), मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार।

धर्म में दोनों का उल्लेख है। जुन्नर की गुहाओं के एक अभिलेख से पता चलता है कि 'इरिल' नामक एक यवन ने अपने खर्च से दो जलाशयों का प्रचलित थे। प्राचीन पाली सुत्रों में बुद्ध के अविर्भाव के समय प्रचलित दर्शन के लगभग 63 वेदों का उल्लेख किया गया निर्माण कराया था।[5] अशोक के समय में आचार्य तिस्स की योजना के अनुसार जो अनेक प्रचारक मण्डलियाँ बौद्धधर्म के प्रचार यवन देशों तक हो गयी।

^egkoa'k* के अनुसार लंका के राजा दुटठ ग्रामणी ने एक महास्तुप के निर्माण के अवसर पर जब एक महोत्सव का आयोजन किया गया तो उसमें भाग लेने के लिए बहुत से बौद्ध आचार्य दूर–दूर से आये थे, उनमें अलसन्द नगरी के यवन स्थविर महाधर्मरक्षित भी थे।[6]

dfu"d vkj ck) /ke dh prFk egklHkk

कुषाण वंश के प्रसिद्ध राजा थे, जिन्हें बौद्ध धर्म के प्रति अगाध आस्था थी। बौद्ध धर्म के इतिहास में उनका वही स्थान है जो राजा अशोक का है। कनिष्क के काल के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। बौद्ध अनुश्रुति के अनुसार वह बुद्ध के महापशिनिर्वाण के 400 वर्ष पश्चात् जम्बुद्वीप का स्वामी बना था। इस प्रकार कनिष्क का समय पहली सदी ईस्वी पूर्व के होना चाहिए था। कनिष्क का साम्राज्य बहुत विस्तृत था, प्रायः सम्पूर्ण उतरी भारत उसके अंतर्गत था। और कश्मीर गांधार तथा मध्य एशिया पर भी उसका शासन विद्यमान था।[7] पुष्पपुर में कनिष्क ने इस विशाल स्तुप का निर्माण कराया था, जो अनेक चीनी यात्री भारत आये, उन्होंने न केवल पेशावर के इस विशाल स्तुप का निम्रण कराया अपितु अनेक ऐसे चैत्यों तथा स्तुपो का उल्लेख किया है जिनका निर्माण कराया गया था। ऐसा प्रमाण मिलता है कि कनिष्क अन्य धर्मो के प्रति भी आस्था रखता था, उसके सिक्कों पर शिव, सूर्य आदि की प्रतिभाएँ भी अंकित है। इसलिए इसमें संदेह नहीं है कि उसने बौद्ध धर्म अपना लिया था और उसके संरक्षण के कारण ही बौद्ध धर्म का काफी प्रचार प्रसार हुआ। बौद्ध धर्म के दृष्टिकोण से कनिष्क के समय की सबसे महत्वपूर्ण घटना बौद्धों के चतुर्थ महासभा है। कनिष्क के द्वारा अपने मतभेदों को दूर करने के लिए बौद्ध विद्वानों की महासभा का आयोजन कश्मीर के कुण्डल नामक विहार में हुई। अर्थात वसुमित्र को उस सभा का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। महासभा में एकत्र बौद्ध विद्वानों ने बौद्ध धर्म शास्त्रों के वास्तविक अभिप्राय के संबंध में चिरकाल तक विचार–विमर्श किया इसके परिणामस्वरूप त्रिपिटक के प्रत्येक पिटक–सूत, विनय और अभिधम्म पर प्रमाणिक भाष्य लिखे गये जो एक–एक लाख श्लोकों के थे। कनिष्क के आदेश से इन भाष्यों को ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण कराके एक स्तुप में रख दिया गया। त्रिपिटक पर लिखे गए इन भाष्यों व टिकाओं को बौद्ध साहित्य के विभाषा की संज्ञा दी गयी। तिव्वती अनुश्रुति के अनुसार बौव्द्ध धर्म की यह चौथी महासभा कशिमर के कुण्डल वन के बजाय जालंधर में आयोजित किया गया।[7] जिसमें एक हजार भिक्षु सम्मिलत हुए थे। महासभा का इन दो पक्षों का क्या क्या मंतव्य थे यह स्पष्ट नहीं है। सम्भवतः आचार्य पार्श्व और वसुबन्धु महा संप्रदायों के रूप में इस समय बौद्ध धर्म के दो पृथक दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते थे। जिनके कारण कुछ समय बाद धर्म उन दो विभागों मे विभक्त हो गया जो हीनयान आदि महायान के नाम से विख्यात हुआ।

egk;ku vkj ghu;ku

राजा अशोक समय तक बौद्ध धर्म का अठारह निकायों का विकास हो चुका था, जिनमें सर्वप्रधान स्थविरवाद और महासंधिक थे। स्थविरवाद से सर्वास्तिवाद निकाय का विकास हुआ। जो कश्मिर गांधार में विशेष रूप से प्रचलित था। महासांधिक सम्प्रदाय का केन्द्र पहले मगध और वैशाली में था, परन्तु बाद में आन्ध्र प्रदेश में विशेष रूप से प्रसार हुआ।[8] जिसका प्रधान केन्द्र अमरावती और नागार्जुन कोण्डा थे। जहाँ महासांधिक संघ का एक अन्य सम्प्रदाय विकसित हुआ। जिसे वैपुल्य बाद कहा जाता है।

प्रायः यह निर्विवाद है कि प्रथम सदी में कनिष्क के समय तक महायान सम्प्रदाय की पृथक रूप से सत्ता स्थापित हो गयी थी। महायानी लोग अन्य बौद्ध संप्रदायों को हीन भावना से देखते थे इसी कारण उन्हें हीनयान कहा करते थे।

egk;ku d fl)kUr (1) महायानी लोग यह मानते थे कि मानव जीवन का परम उद्वेश्य बोधिसत्व की सथिति को प्राप्त करना, बोधिसत्व वह है जो दुसरो की भलाई के लिए सर्वस्थ त्याग दे। अंधे को आँख तथा भूखे को भोजन प्यासे को पानी अर्पण करना। परोपकार के लिए कष्ट को कष्ट नहीं समझना महाज्ञानियों का आदेश नियम थे। गुणों के विकास की इस प्रकाष्ठा को महायान सिद्धान्त में पारमिता कहा गया है, जो इस प्रकार है— दान, शील, सच्चरित्रता शांति सहनशीलता, वीर्य या मानवीय शक्ति, प्रज्ञा, मन या ध्यान की एकाग्रता, बल, ज्ञान आदि। इनमे से एक एक गुण की पारमिता तक पहुंचने में मनुष्य को अनेक जन्म ग्रहण करने की आवश्यकता होती है। पर यह आवश्यक नही है इन गुणों की प्राप्ति के लिए मनुष्य सांसारिक जीवन को त्याग कर भिक्षु बन जाये। गृहस्थ जीवन के भी इन गुणों की प्रकाष्ठा तक पहुंचने का विचार सबसे पहले जातक कथाओं में मिलता है। यह स्वीकार करने की बात है कि बौधिसत्व के विचार का प्रतिपादन महायान के प्रादुर्भाव से पहले भी किया जाता था। गौतम बुद्ध के अनुयायी शुरू में गुरू को एक मनुष्य मानते थे, जिन्होंने अन्य प्राणियों के समान जन्म ग्रहण किया, जो संसार में रहे और जिनकी शिक्षाएँ व मन्तव्य सबके लिए कल्याणकारी थे। परन्तु महासांधिको का मानना था कि बुद्ध ने कभी जन्म लिया, और न वे इस संसार में आ रहे हैं। महायानीयों ने इस बात पर बल दिया है कि बुद्ध अन्य प्राणियों के समान शरीर धारण नहीं करते, और न जन्म मरण के चक्र में पड़ते हैं। वे तो अपनी इच्छानुसार किसी भी रूप में और कितने ही समय के लिए अपने को प्रकट कर सकते हैं।

ghu;ku %& महायान के प्रादुर्भाव से पहले बौद्ध धर्म का जो रूप था महायानी उनको हीनयोन कहते थे। मनुष्य के जीवन का अंतिम उद्वेश्य निर्वाण प्राप्त करना है, जिसके लिए उस अष्टांग मार्ग का अनुसरण करना आवश्यक है जिसका प्रतिपादन बुद्ध द्वारा किया गया था। सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प का पूर्ण रूप से आचारण करके ही मनुष्य अपने जीवन को कल्याणमय बना सकता है, अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए मनुष्य को स्वयं ही साधना करनी होगी। हीनयान के दर्शन में ईश्वर या किसी अलौकिक सत्ता को स्वीकार नहीं किया गया है। साथ ही बाह्य पदार्थो की यर्थार्थ रूप से सत्ता को भी वह स्वीकार नहीं करता। वैभाषिक सम्प्रदाय के चार महान आचार्य हुए— वसुमित्र, धर्मशास्त्र, द्योषक और बुद्धदेव। बौद्धों की चौथी महासभा द्वारा त्रिपिटक का जो प्रमाणिक भाष्य तैयार कराया था जिसे विभाषा कहा जाता है, उसके लिखने में वसुमित्र का अहम योगदान था। धर्मशास्त्र वसुमित्र के मामा थे, और उन्होंने विभाषा के संकल्प में सहयोग दिया था। हीनयान का प्रचार इस समय भारत के दक्षिण तथा दक्षिण–पुर्वी प्रदेशों लंका, वर्मा, थाईलैण्ड आदि में है। और महायान– का भारत उत्तर और पूर्व में रचित देशों– तिब्बत, चीन, मंगोलिया, कोरिया, जापान आदि में है।

ck) /ke dk âkl& गुप्त सम्राट और मगध के पालवंशी राजा जिस बौद्ध धर्म के अनुयायी थे और जिसके महाविहारों विद्वानों आचार्यो बारहवीं सदी तक ज्ञान और धर्म के संदेश वाहक होकर सुदूर देशों में जाया करते थे, वह मुस्लिम आक्रमणों के बाद भारत में सर्वथा, लुप्त सा हो गया। मौर्यो के बाद भारत में पौराणिक वैदिक धर्म के पुनरूत्थान का जो आन्दोलन शुरू हुआ था उसमें भारत के सर्वसाधारण गृहस्थ, ब्राह्मण का समान रूप से आदर करते थे।

बौद्ध संघ की आंतरिक शिथिलता के साथ–साथ ज्यों–ज्यों अन्य धर्मो के ब्राह्मणों और सन्यासियों में स्फूर्ति बढ़ती गई, त्यों–त्यों बौद्ध भिक्षुओं का जनता पर प्रभाव कम होता चला गया। गुप्त सम्राट में कुछ वैष्णव, कुछ शैव और कुछ बौद्ध थे। एक ही परिवार में भिन्न–भिन्न व्यक्ति भिन्न–भिन्न धर्मो के अनुयायी हो सकते थे।

fu"d"k

बारहवीं सदी के अन्त में मुसलमानों के आक्रमण से जब मगध महाविहार तथा अन्य प्रदेशों संघाराम और विहार नष्ट हुए तो बौद्ध भिक्षुओं के रहे सहे प्रभाव का भी अंत हो गया। सुदूर दक्षिण के सन्यासियों के मठ मुसलमानों के आक्रमणों से बचे हुए थे। रामानुज शंकराचार्य आदि ने जिन नये धार्मिक आंदोलनों का सुत्रपात किया था, उसके केन्द्र दक्षिण भारत में ही थे। वहाँ के सन्यासी से भिक्षु नेपाल और तिब्बत की ओर चले गये थे। मुसलमानों को बौद्ध भिक्षुओं से बहुत द्वेष था। जब मुसलमानों ने मध्य एशिया पर हमला किया तो उन क्षेत्रों

में भी बौद्ध धर्म का प्रचार था। वहाँ भी मुसलमानों ने बौद्ध विहारों और भिक्षुओं को आघात पहुंचाया था। भारत से बौद्ध धर्म के लोप का यह भी एक महत्वपूर्ण कारण था। वज्रयान के विकास ने भी भारत में बौद्ध धर्म के ह्रास में सहायता दी। दुसरी ओर कुमारिल और शंकर जैसे पण्डित विद्वान थे वहाँ साथ ही त्यागी और तपस्वी भी थे, उन्होंने अपने सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए और सन्यासियों की मण्डलियों को संगठित किया। प्रतापी गढ़वाल वंश के अनेक राजपुरूष ने भी बौद्ध धर्म के प्रति भक्ति प्रदर्शित किया था। मौर्यो के बाद वैदिक धर्म का जो पुनरूत्थान हुआ था, वह धीरे–धीरे जोर पकड़ता जा रहा था, अन्यत्र इस धर्म का तेजी के साथ ह्रास हो रहा था। जब मुहब्बत बिन बख्तियार खिलजी जैसे धर्मान्ध आक्रान्तओं के बिहार के बौद्ध धर्म केन्द्रों को भूमिसात किया, तब यह धर्म इस देश से लुप्त ही गया।

I nHk xUFk I ph

1. थेरिगाथा, पृ0 9.
2. सुतनिपात, पृ0 7.
3. वही, पृ0 51.
4. वही ब्राह्मणधम्मिक सुत गाथा– 24, पृ0–61.
5. वही श्लोक– 26, पृ0 61.
6. अवदानशतक, जिल्द– 1, 307 / 88
7. दिव्यवदान 416 / 9.
8. सुतनिपात, पृ0 136.
9. मज्झिमनिकाय, 51.
10. जातक, भाग– 5, 503 / 20
11. मज्झिमनिकाय 51.
12. जातक, भाग– 15 / 209.
13. वही, 539 / 60.

❑❑❑